ANNUAL HINDI USA MAGAZINE

WWW.HINDIUSA.ORG

इंद्रधनुष

शिक्षण / प्रशिक्षण संयोजिका का संदेश

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि हिन्दी यू.एस.ए की रजत जयंती के अवसर पर हम इस वर्ष अपने नन्हें विद्यार्थियों के लिए जो अभी हिंदी में लेखन नहीं कर पाते उन कनिष्ठ एवम् प्रथमा स्तर के छात्र-छात्राओ के लिए “इंद्रधनुष” नामक ऑनलाइन पत्रिका का शुभारंभ करने जा रहें हैं। मैं इस पत्रिका के लिये कठिन परिश्रम करने वाली सभी स्तर संचालिकाओं और पत्रिका के ऑनलाइन स्वरूप को साकार करने के लिये सुश्री ज्योति चतुर्वेदी जी को हृदय से धन्यवाद देना चाहूँगी।

मुझें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका हिन्दी यू.एस.ए. के आरंभिक स्तरों का दर्पण बनकर अभिभावकों एवम् पाठकों को प्रभावित करने में सफल होगी। इस पत्रिका के माध्यम से शिक्षक- शिक्षिकाएँ अपने पाठ्यक्रम को प्रभावशाली रूप मे समाज के सामने प्रस्तुत कर पाएगी।

मैं “इंद्रधनुष “ पत्रिका की आशातीत (अप्रत्याशित) सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेक्षित (प्रकट) करती हूँ और आप सबसे यह आशा करती हूँ कि आप इसे लोकप्रिय बनाने मे संस्था का सहयोग करेंगे।

धन्यवाद
रचिता सिंह

Table of Contents

पृष्ठ 1	हिन्दीUSA का परिचय
पृष्ठ 3	कनिष्ट १ और २ परिचय
पृष्ठ 4	कनिष्ट २
पृष्ठ 10	प्रथमा १ परिचय
पृष्ठ 11	प्रथमा १

इंद्रधनुष

हिन्दीUSA का परिचय

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर २४ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। हिन्दी यू.एस.ए. की २५ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दी की कक्षाएँ ९ विभिन्न स्तरों में चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

www.hindiusa.org 1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक)	– 856-625-4335
रचिता सिंह (शिक्षण/प्रशिक्षण संयोजिका)	– 609-248-5966
राज मित्तल (धनराशि संयोजक)	– 732-423-4619
माणक काबरा (प्रबंध संयोजक)	– 718-414-5429
सुशील अग्रवाल ('कर्मभूमि' संयोजक)	– 908-361-0220

शिक्षण समिति

क्षमा सोनी	– कनिष्ठा-१ स्तर
रंजनी रामनाथन, हेमांगी शिंदे	- कनिष्ठा-२ स्तर
मोनिका गुप्ता, मीनाक्षी सिंह	– प्रथमा-१ स्तर
सरिता नेमानी, सन्जोत ताटके	– प्रथमा-२ स्तर
इंदु श्रीवास्तव, अदिति महेश्वरी	– मध्यमा-१ स्तर
ऋचा खरे, गरिमा अग्रवाल	– मध्यमा-२ स्तर
ऋतु जग्गी, राजीव महाजन	– मध्यमा-३ स्तर
सुशील अग्रवाल, हंसा सिंह	– उच्चस्तर-१
कविता प्रसाद	– उच्चस्तर-२

अन्य समितियाँ

अमित खरे	— वेब साइट, वीडियो
योगिता मोदी	— बुक स्टाल प्रबंधन
वेणुगोपाल वर्मा	— शिक्षण प्रबंधन और ऑनलाइन पंजीकरण

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429), सुनील दुबे (848-248-6500)

साऊथ ब्रंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733)

मॉन्टगोमरी: रीना सिंह (908-499-1555)

पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535), स्वाति सिंघानिया (609-819-3305)

ईस्ट ब्रंस्विक: स्वागता माने (646-415-4072)

वुडब्रिज: शिव आर्य (908-812-1253)

जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835)

प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)

लॉरेंसविल: संजय भयाना (732-447-3935)

चैरी हिल: जय जैन (856-236-6272), वेनू वर्मा (609-598-4038)

चैस्टरफील्ड: मधु राजपाल (732-331-5835)

होमडेल: रंजना गुप्ता (908-380-8697)

मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)

नॉर्थ ब्रंस्विक: योगिता मोदी (609-785-1604)

बस्किंग रिज: धनंजय मराठे (716-361-4681)

विल्टन: अमित अग्रवाल (630-401-0690), चेतना मल्लारपु (475-999-8705)

स्टैमफर्ड: मनीष महेश्वरी (203-522-8888)

एवॉन: बसवराज गरग (732-201-3779)

ट्रम्बुल: रुचि शर्मा (203-570-1261)

एलिकाट सिटी (MD): मुरली तुल्शियान (201-892-7898)

नीधम (MA): विक्रम कौल (203-919-1394)

अटलांटा (GA): रंजन पठानिया (203-993-9631)

शेर्लोट (NC): कीर्ति वालिआ (214-998-5760)

सैंट लुइस (MO): मयंक जैन (636-575-9348)

नॉर्थ बोरो (MA): संजीव झा (781-559-4200)

ऑनलाइन: राजीव श्रीवास्तव (732-429-8612)

सैन डिएगो (CA): मनीष पाण्डेय (760-576-6002)

एशबर्न (VA): अदिति जादौन (321-244-1445)

टेमेकुला (CA): वेद प्रकाश भार्गव (408-832-7360)

हमको सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

कनिष्ट १ और २ परिचय

हिन्दीUSA में कनिष्ठा-१ और कनिष्ठा-२ स्तर हमारे सबसे प्रारंभिक और महत्वपूर्ण शैक्षणिक पड़ाव हैं। यहीं से ५ से ७ वर्ष की आयु के नन्हें विद्यार्थी हिन्दी भाषा की समृद्ध दुनिया में पहला कदम रखते हैं।

वर्तमान शैक्षणिक वर्ष में, हिन्दीUSA की २९ पाठशालाओं में कनिष्ठा-१ व कनिष्ठा-२ स्तरों में कुल मिलाकर ३६८ बच्चे उत्साहपूर्वक अध्ययन कर रहे हैं। इन बच्चों में हिन्दी भाषा के प्रति रुचि एवं आत्मीयता विकसित करने हेतु, हमारे ७५ से अधिक समर्पित शिक्षक-शिक्षिकाएं पूर्ण उत्साह और लगन से कार्य कर रहे हैं।

इन स्तरों में बच्चों को कहानियों, खेलों और विविध क्रियाकलापों के माध्यम से स्वरों, गिनती, फल-सब्ज़ियों, जानवरों, दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले शब्दों, और सरल संवादों का परिचय कराया जाता है। साथ ही, भारतीय त्योहारों, पारंपरिक परिधानों और सांस्कृतिक मूल्यों से भी उन्हें अवगत कराया जाता है, जिससे भाषा के साथ-साथ संस्कृति के प्रति भी उनका जुड़ाव गहराता है।

कनिष्ठा स्तरों पर जो बीज बोया जाता है, वही आगे चलकर भाषा, पहचान और सांस्कृतिक चेतना के रूप में विकसित होता है। यह केवल भाषा नहीं, अपनी विरासत से जुड़ने की यात्रा है — और हम इस यात्रा का हिस्सा बनकर गौरवान्वित हैं।

स्तर संचालिका

क्षमा सोनी -कनिष्ट-१

रंजनी रामनाथन -कनिष्ट-२

हेमांगी शिंदे-कनिष्ट-२

कनिष्ठा -२

नमस्ते | ईस्ट ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला कनिष्ठा -२ की शिक्षिकाएं श्रुति गुप्ता जी और शशि पै जी है | हमारे विद्यार्थीयों ने भारतीय त्योहारों पर बहुत सारी हस्तकलाएं बनाई |

दिवाली

दिवाली में हमने दिए सजाए और दिवाली की कविता सीखी। दिवाली में हमने सब से पूछा कि वे त्योहार कैसे मनाते हैं। सभी को कौनसे पटाखे और मिठाई पसंद है? सभी ने अपनी पसंद बताई। चर्चा की एंव प्रश्न पूछें की रंगोली किसने बनाई और कौनसे रंग भरे?
दिवाली की कविता “आई दिवाली“ सीखी।

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति, बिहू, लोहड़ी, और पोंगल के अवसर पर हमने पतंग बनाई। उसमें लोहड़ी, पोंगल, और बिहू के चित्रों में रंग भरें। बच्चों को बताया कि ये त्योहार कौनसे प्रदेश में और कब मनाते हैं।बच्चों ने बताया कि उन्होंने पोंगल में क्या खाया।

गणतंत्र दिवस

हमने गणतंत्र दिवस के बारे में बच्चों को बताया। तिरंगे के रंग और उनका महत्व समझाया। बच्चों को गणतंत्र दिवस की परेड दिखाई। उसके बाद जल, थल और हवाई सेना के बारे में चर्चा की।
हमने बच्चों को बताया कि, हमारे देश का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ था। इसलिए इसे राष्ट्रीय गौरव और स्मरण का दिन "गणतंत्र दिवस" कहा जाता है|तिरंगे के रंगों का भी महत्व है - केसरिया रंग बलिदान की भावना को दर्शाता है, सफेद रंग शुद्धता और सच्चाई को दर्शाता है, और हरा रंग समृद्धि और विकास को दर्शाता है।

होली

होली में हमने बच्चों को होलिका की कहानी सुनाई। कई बच्चों ने बताया कि वे होलिका दहन के लिए मंदिर गए थे। गुजिया खाई, पिचकारी से रंग खेले, या गुलाल से होली की कविता “होली आई “ सीखी।
धन्यवाद

होली आई, होली आई,
रंग बिरंगी होली आई।
धूम मचाती होली आई,
घर घर में खुशियाँ लाई।
बच्चों की यह टोली आई,
हाथ में पिचकारी लाई।
रंग गुलाल उड़ाती आई,
होली आई, होली आई।

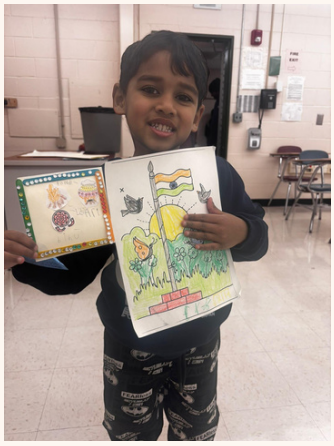

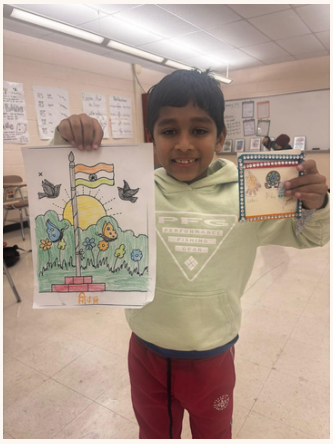

दिवाली
आई दिवाली, आई दिवाली,
आई दिवाली रे।
दीप जलाओ, खुशी मनाओ,
आई दिवाली रे।
खूब चले फुलझड़ी पटाखे,
आई दिवाली रे।
सबको बाँटो खूब मिठाई,
आई रे दिवाली।

चेरी हिल कनिष्ठ-२ की कक्षा में हम आपका स्वागत करती हैं। मैं, हेमांगी शिंदे पिछले १० वर्षों से कनिष्ठ-२ के छात्रों को पढ़ा रही हूँ। इस वर्ष प्रियांका सिंह जी मेरे साथ सह-शिक्षिका के रूप में जुड़ी हैं। वे अपने साथ नए विचार और कल्पनाओं का भंडार लेकर आई हैं, जिससे हमारी कक्षा और भी रोचक बन गई है।

कनिष्ठ २ कक्षा में आनेवाले कई बच्चों का हिन्दी के साथ यह प्रथम परिचय होता है। उनके इस अनुभव को आनंददायक बनाने के लिए हम विविध माध्यमों का प्रयोग करती हैं । पुस्तकी पाठ रटने के बजाय रचनात्मक खेल, कहानियाँ और वास्तविक जीवन के उदाहरणों द्वारा हम प्रभावी रूप से बच्चों की रुचि और उत्साह बनाए रखने की निरंतर कोशिश करती हैं। हर सप्ताह नए खेल / हस्तकला / परियोजनाओं के कारण बच्चे कक्षा में आने के लिए उत्साहित रहते हैं ।

कक्षा में त्योहार :- हमारी कक्षा में एक अनूठी पहल के तहत, हमने प्रत्येक त्योहार पर एक अभिभावक को आमंत्रित करने की परंपरा शुरू की है। वे कक्षा मे आकर संबंधित त्योहार की कहानी सुनाते हैं और साथ में बच्चों से कोई क्रिया-कलाप भी करवाते हैं। सक्रिय रूप से बच्चों को शामिल करने से उनकी आकलन शक्ति तो बढ़ती ही है, अपितु ये गतिविधियाँ उन्हें भारतीय संस्कृति के और करीब ले जाती हैं। प्रस्तुत है ऐसे ही कुछ त्योहारों में बनाई गई कलाकृतियों की झलकियाँ।

कक्षा परियोजनाएँ, खेल एवं क्रियात्मक गतिविधियाँ :- इसके अलावा पाठ्यक्रम पर आधारित विषयों पर बच्चे अभिभावकों के साथ मिलकर विविध परियोजनाएँ भी बनाते हैं, जैसे कि पोस्टर्स, चित्र, कठपुतलियाँ आदि। वे अपनी परियोजनाओं को बड़े गर्व, आनंद और आत्मविश्वास के साथ कक्षा मे प्रस्तुत करते हैं। इस प्रक्रिया से उनका दृश्य एवं मौखिक अभ्यास सफल होता है और हिन्दी में वक्तृत्व (oratory skills) करने का आत्मविश्वास भी दृढ़ होने लगता है। ऐसे ही कुछ चुनिंदा क्रिया-कलाप, खेल एवं परियोजनाओं के चित्र यहाँ संलग्न किये गए हैं। हम आशा करती हैं कि इन्हें देखकर आपको अत्यंत प्रसन्नता होगी और हमारी कक्षा की यह रोचक यात्रा आपको प्रेरित करेगी।

हमें गर्व है कि हम बच्चों को हिंदी भाषा से जोड़ने के इस रोचक सफर का हिस्सा हैं। यह यात्रा न केवल उनकी भाषा दक्षता को निखारती है, बल्कि उनकी रचनात्मकता, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक समझ को भी गहराई से विकसित करती है।

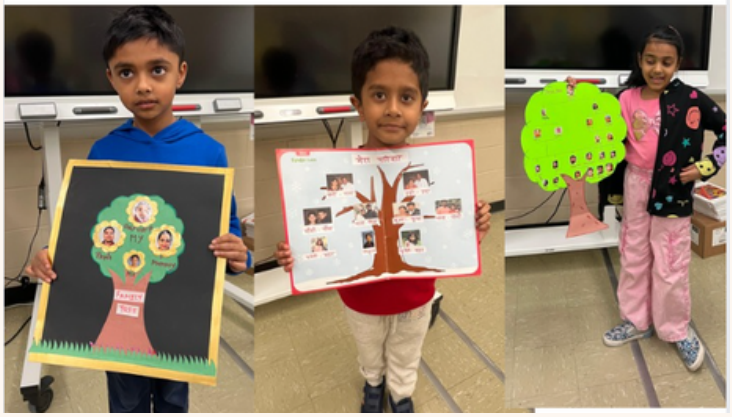

रंगबिरंगी दुनिया

दशहरा
रावण दहन

भारतीय
परिधान

सभीको मेरा अभिनन्दन।मैं मनीषावर्मा विगत ,११ वर्षों सेजर्सी सिटी हिंदी पाठ्यशालामें कनिष्ठा २ की अध्यापिकाहूँ। मुझे बहुत खुशीहै कि मैं छोटे-छोटे बच्चों कोहिंदी भाषा और भारतीयसंस्कृति के बारे मेंसीखने में अपना योगदानदे पाती हूँ। हिंदीयू.स.ए. केसाथ जुड़कर मैं उनके महत्वपूर्णउद्देश्य को पूरा करनेमें अपना पूरी क्षमताके साथ प्रयास कररही हूँ। मेरे लिएहिंदी भाषा न केवलहमारी संस्कृति और परंपराओं सेजुड़ने जुड़ने का माध्यम है अपितु, यह हमारे विचारों और भावनाओं कोव्यक्त करने का एकसुंदर माध्यम भी है। इससंस्था के साथ मिलकरहम अमेरिका में रहने वालेभारतीय बच्चों को हिंदी भाषाऔर भारत की समृद्धसांस्कृतिक धरोहर के बारे मेंबताने और सीखानेका प्रयासकरते है।

इन बच्चों को हिंदी सिखानेका मेरा मुख्य उद्देश्ययह है कि वेभारत की सबसे अधिकबोले जाने वाली औरभारत को जोड़ने वालीभाषा को सीख सकेंऔर अपनी संस्कृत, परंपरासे न केवल जुड़सकें बल्कि उसका उन्हें गर्वभी हो। यह उन्हेंआगे चलकर अपनी जड़ों से जुड़ने और अपनी पहचान को मजबूत करने में बहुत सहायक होता है। भाषा सीखनेकी प्रक्रिया बच्चों के संज्ञानात्मक विकासमें मदद करती हैऔर उनकी संवाद क्षमताको भी निखारती है।मुझे यह देखकर बेहदआनंद मिलता है जब बच्चेनई शब्दावली सीखते हैं, सही उच्चारणकरने का प्रयास करतेहैं और हिंदी मेंसंवाद करने में आनंदऔर गर्व का अनुभवकरते हैं। हिंदी भाषासिखाना मेरे लिए सिर्फएक काम नहीं, बल्किएक उद्देश्य है, जिससे मैंअगली पीढ़ी को हमारी समृद्धभाषा और संस्कृति सेजोड़ने का प्रयास करतीहूँ।

कनिष्ठा -२ के बच्चों कोहम न केवल हिंदीबोलना और लिखना सिखाते हैं बल्कि उन्हे कला और शिल्प के माध्यम सेपाठ्यक्रम पढ़ाते है। पाठ्क्रम केसभी महत्त्वपूर्ण प्रसंगों और भारतीय पर्वोंपर हम बच्चों केसाथ कक्षा परियोजनाएं करते हैं जोकी उन्हें विषय को समझनेमें बहुत सहायता करतेहै। हम बच्चों कोकवितापाठ प्रतियोगिता के लिए तैयारकरने में और हिंदीमहोत्सव में उन्हें भाग लेने मेंउनकी पूरी मदद औरउन्हें प्रोत्साहित करते हैं। मैंबच्चो को कहानी औरगीत संगीत के माध्यम सेभी भारतीय त्योहारों और संस्कृति कोसिखाती हूँ। अगले पृष्ठपर आप मेरे विद्यार्थियोंद्वारा किये गए कुछकक्षा परियोजनाओं को देख सकतेहै।

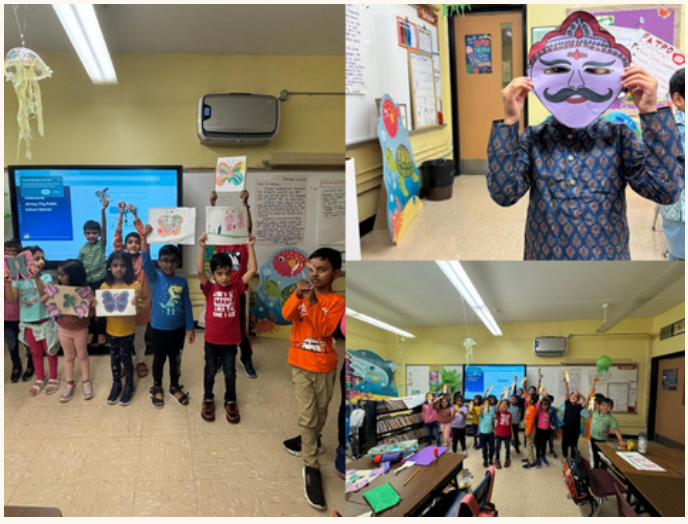

प्रथमा १ परिचय

प्रथमा-१ में बच्चे अनेक,
प्यारे प्यारे, बहुत ही नेक
इनको हम सिखाते वर्णमाला
रंग सिखाते नीला हरा पीला और काला
एक दो तीन और चार, गिनती भी सिखाते इस बार
फल सब्ज़ी आकार जानवर, ऋतुएँ भी सिखाते शीत और पतझड़
रिश्ते सिखाते जैसे मामा मामी दादा दादी
और सिखाते त्योहार होली दीवाली व बैसाखी
गृह कार्य, कविता, महोत्सव व प्रोजेक्ट
बच्चे उत्साह से करते झटपट

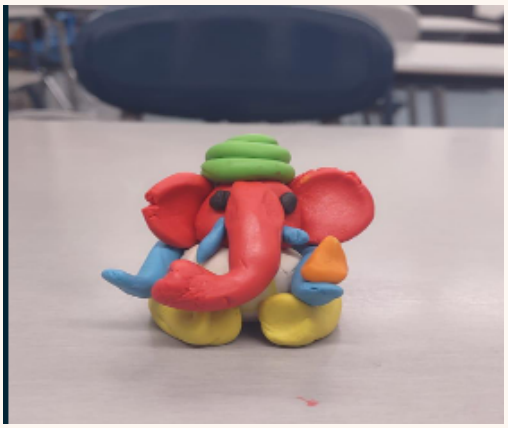

गणपति का बहुत ही सुंदर शिल्प बनाया
है पथमा-१ के छात्रों ने
गणपति बप्पा मोरया!

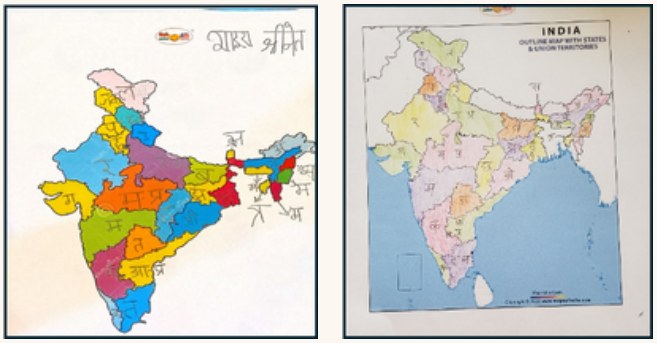

बच्चों ने भारत के गौरवशाली राज्यों के बारे में सीखा

प्रथमा -१

दीपावली पर आपने अपने कमरे और घर को कैसे सजाया? बच्चों ने अपने घरों की सजावट का बड़ी ही सुंदरता से प्रस्तुतीकरण किया है

शुभ
दिपावली
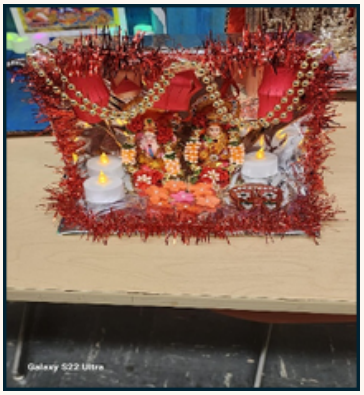

BLOCK
शुभ
लाभ

मेरे रंग बिरंगे कपड़े

ALL ABOUT ME PROJECT - CHERRY HILL
PIC•COLLAGE

महान व्यक्तियों का एक खूबसूरत झलक

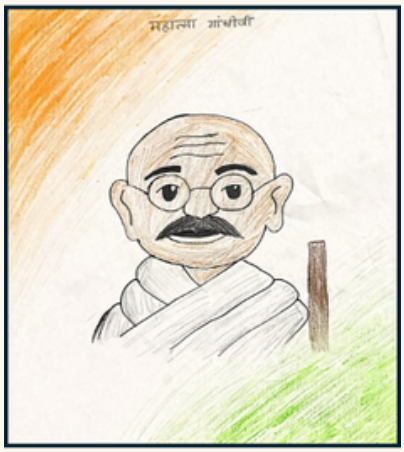

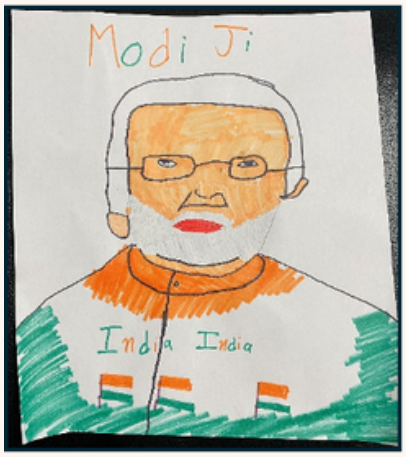

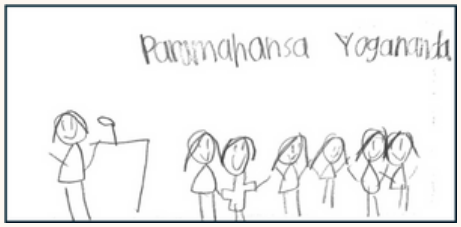

आपको कौन सा जानवर पसंद है? इस प्रश्न के उत्तर में प्रथम-१ के छात्रों ने बड़ी रुची के साथ ये रचनात्मक परियोजनाएँ बनाईं।

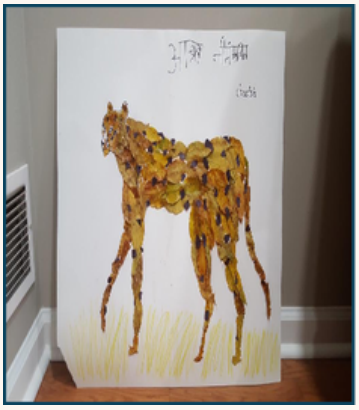

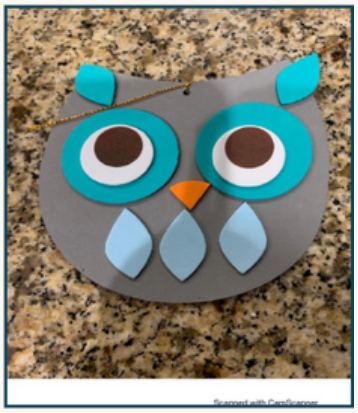

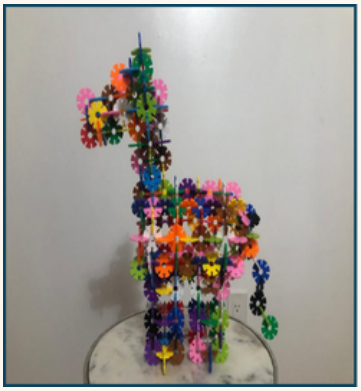

आपको कौन सी फल / सब्जी पसंद है? प्रथम-१ के छात्रों ने बड़े उत्साह और रुचि के साथ फलों और सब्जियों के ३-डी शिल्प बनाए।

नमस्ते,

ईस्ट ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला प्रथमा -१ की शिक्षिका रितु सिन्हा जी औरअध्यापक वरुण अग्निहोत्री जी है हम गर्व के साथ ईस्ट ब्रंसविक स्कूल के B -1 कक्षा का दिवाली के अवसर पर बनाया हुआ प्रोजेक्ट साझा कर रहे हैं|

दिवाली, जिसे रोशनी का त्योहार भी कहा जाता है, आशा और विजय का उत्सव है|

यह बुराई पर अच्छाई और अंधकार पर प्रकाश की जीत का प्रतीक है|

लोग अपने घरों को दीपों से सजाते हैं, मिठाइयों का आदान-प्रदान करते हैं और समृद्धि की प्रार्थना करते हैं|

जीवंत आतिशबाज़ी और दिल से की जाने वाली खुशियां परिवारों और समुदायों को एकजुट करती हैं| इस प्रकार की मार्मिकता हमनें बच्चों के साथ प्रदान की | सभी छात्रों ने अपने अपने तरीके से उसपर कुछ प्रोजेक्ट्स बनाये और हमारे पाठशाला की दिवाली उत्सव में प्रदर्शित किये |

धन्यवाद |

WHAT CAN YOU DO?
PALERMO
ROME
NAPOLI
Amalfi
VENEZIA
HAPPY DIWALI
HAPPY DIWALI

नमस्ते, मेरा नाम मंजू अग्निहोत्री है। मैं हिन्दी यू. एस. ए. के वुडब्रिज पाठशाला में प्रथमा- २ की पिछले आठ वर्षों से अध्यापिका हूँ। इस वर्ष मेरे साथ सहाध्यापिका अभिका जैन जी कार्य कर रहीं हैं।
इस वर्ष हमारी कक्षा ने कुछ परियोजनाओं पर कार्य किया है जिसमे मेरे घर का सामान परियोजना के कार्य को आप लोगों के साथ साझा कर रही हूँ।
"घर का सामान" परियोजना पर क्षात्र व क्षात्राओं का कार्य
"घर का सामान" परियोजना के अंतर्गत, मेरे क्षात्र व क्षात्राओं ने घर में उपयोग होने वाले विभिन्न सामानों को गहराई से अध्ययन किया और उन्हें प्रस्तुत किया। इस परियोजना के माध्यम से छात्रों ने न केवल घरेलू सामानों की महत्वता और उपयोगिता को समझा, बल्कि यह भी जाना कि ये वस्तुएं हमारे जीवन को कैसे आसान और आरामदायक बनाती हैं। छात्रों ने रचनात्मकता और ध्यानपूर्वक अनुसंधान किया और घरेलू सामान जैसे फर्नीचर, रसोई के उपकरण, इलेक्ट्रॉनिक सामान और सफाई के सामानों को बहुत अच्छे से प्रदर्शित किया।
मुझे अपने छात्रों के प्रयासों पर गर्व है, क्योंकि उनके काम में संगठन, अनुसंधान और स्पष्ट रूप से विचार प्रस्तुत करने की क्षमता का प्रदर्शन हुआ। उनके कार्य ने यह दर्शाया कि घरेलू सामान सिर्फ वस्तुएं नहीं हैं, बल्कि ये हमारे घर को व्यवस्थित और कार्यक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस परियोजना ने छात्रों को टीमवर्क, रचनात्मकता और संवाद कौशल को बढ़ाने का अवसर प्रदान किया, और मुझे आशा है कि आनेवाले असाइनमेंट्स में ये कौशल और अधिक विकसित होंगे।

Welcome

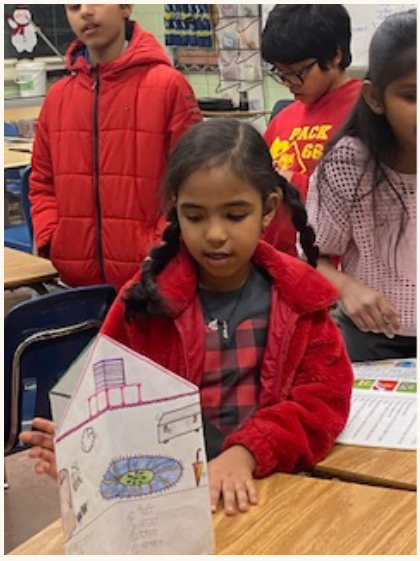

साउथ ब्रुंस्विक पाठशाला

होमडेल पाठशाला

विलटन पाठशाला

नीडम पाठशाला

ऑनलाइन पाठशाला

एडीसन पाठशाला

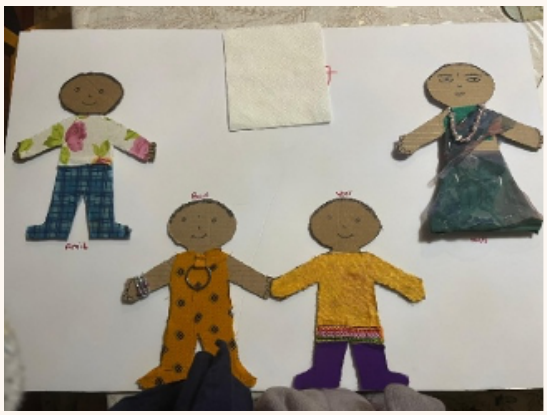

इंद्रधनुष